निदेशकों की रिपोर्ट का अनुलग्नक–II

प्रबंधन विचार विमर्श और विश्लेषण रिपोर्ट

वैश्विक आर्थिक समीक्षा

वर्ष 2010–11 में वैश्विक अर्थव्यवस्था का असमान रूप से विस्तार होना जारी रहा, जिसमें विकसित अर्थव्यवस्थाओं के मुकाबले नए उभरती हुई

अर्थव्यवस्थाएं ज्यादा तीव्र गति से उभरी। वैश्विक वास्तविक जीडीपी पिछले वर्ष 0.5 प्रतिशत के नकारात्मक स्तर से 2010 में 5.1 प्रतिशत के रूप में बढ़ा।

दशकों में खराब वैश्विक मंदी के प्रति संतुलन के सरकारी प्रोत्साहित करने वाले लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए यह वृद्धि कई विकसित देशों में बनी रही। हालांकि उनकी वृद्धि दर अभी भी इस प्रवृत्ति के स्तर से नीचे रही है। प्रमुख विकसित अर्थव्यवस्थाओं ने 2010 में 3 प्रतिशत की सामान्य आर्थिक वृद्धि की हालांकि इनमें से अधिकतर अर्थव्यवस्थाएं बेरोजगारी, कमजोरी मांग और बढ़ते हुए ऋण से बोझिल रहीं और इस समय भी अन्य चुनौतियों के साथ–साथ वित्तीय और श्रम बाजारों में सुधारों के साथ संघर्ष कर रही हैं जबकि 2010 के दौरान अमरीका की वृद्धि 2.9 प्रतिशत रही, इयू क्षेत्र ने 1.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। इस क्षेत्र में पूंजीगत मंदी की मजबूत निर्यात वृद्धि द्वारा यूरोप को उभरने के लिए प्रोत्साहन मिला।

दूसरी और उभरते हुए और विकसित राष्ट्र वैश्विक अर्थव्यवस्था में वृद्धि करने में इंजन की तरह प्रमुख रहे

प्रबंधन विचार विमर्श और विश्लेषण रिपोर्ट

जिन्होंने 2010 में 7.4 प्रतिशत की आर्थिक वृद्धि दर्ज की। स्वस्थ निर्यात और घरेलू मांग से प्रोत्साहित होकर एशिया ने 2010 में 7.1 प्रतिशत की तीव्र आर्थिक वृद्धि प्राप्त की जिसमें चीन और भारत प्रमुख थे। उप सहारा अफ्रीका क्षेत्र में भी एक तीव्र और आगे कायम रहने वाली वृद्धि दर्ज की गई तथापि बढ़ती हुई खाद्य और मदों की कीमतों ने इन क्षेत्रों के सामाजिक और आर्थिक वातावरण के समक्ष चुनौतियां प्रस्तुत की।

कायम रहने वाली मजबूत वैश्विक वृद्धि की संभावना इस विगत वर्ष के दौरान और भी मजबूत हुई चूंकि विकसित देशों में निजी घरेलू मांग पर अनिश्चितताएं कम हुई। इस बीच में मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका के चलते वृद्धि फिर से प्रभावित हुई और साथ–साथ

जापान में मार्च 2011 के मध्य में भूकंप से संबंधित दुर्घटनाओं ने भी इसे प्रभावित किया हालांकि जापानी सरकार द्वारा शीघ्र ही निर्णायक गतिविधियों के द्वारा तोहोकू भूकंप और सुनामी से प्रारंभिक क्षतियों को सीमित करने में मजबूती मिली। फलस्वरूप इनका जापानी उत्पादन पर सीमित नकारात्मक प्रभाव पड़ा हालांकि इसके बाद इन घटनाओं के फलस्वरूप इस क्षेत्र और विश्व पर इसकी छाया अभी तक मंडरा रही है। मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका में सामाजिक, राजनीतिक तनावों ने तेल की कीमतों पर दवाब डाला जिससे वैश्विक बढ़ोतरी और एशिया के निर्यातों की गति मंद पड़ सकती है।

वर्ष के दौरान वैश्विक व्यापार में मात्रा की दृष्टि से 12.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई। मदों की कीमतों में विशेष रूप से उभरते हुए एशिया से प्रत्याशित वैश्विक मांग की अपेक्षा मजबूती से उच्च स्तरों की और अग्रसर हुई। तेल की कीमतें अप्रैल 2010 के 83 अमरीकी डालर प्रति बैरल से मई 2011 से 100 डालर प्रति बैरल के रूप में बढ़ गई। जनवरी 2011 के बाद से ओपेक के आशा से नीचे के उत्पादन और मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका में अराजकता के फलस्वरूप तेल की कीमतों में बढ़ोतरी हुई।

प्रबंधन विचार विमर्श और विश्लेषण रिपोर्ट

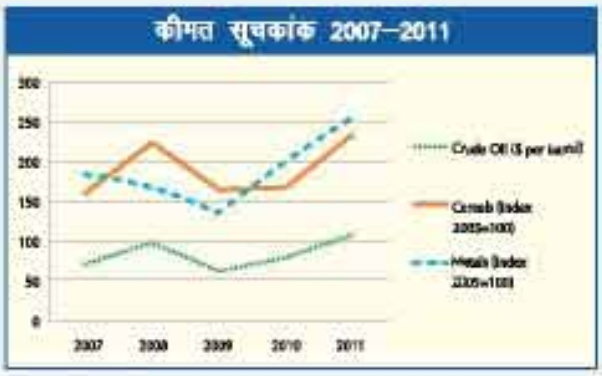

SOURCE : IMF

(अनाज, गेहूँ, मक्का, चावल, जौ, धातु एवं तांबा, एल्यूमीनियम, लौह अयस्क, टिन, निकेल, जिंक, शीशा और यूरेनियम

मदों की बढ़ती हुई कीमतें और तेल आपूर्ति में व्यवधान से वैश्विक अर्थव्यवस्था की वापसी और विश्व व्यापार के लिए नए जोखिम पैदा हो सकते हैं। तथापि, वित्तीय बाजारों में धीरे–धीरे सुधार, कई उभरती हुई और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में उत्साहजनक गतिविधियाँ और विकसित अर्थव्वस्थाओं में बढ़ता हुआ आत्मविश्वास वर्ष 2011–12 हेतु अच्छी आर्थिक संभावनाओं की ओर संकेत करता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की समीक्षा

भारतीय अर्थव्यवस्था ने 2010–11 के दौरान एक उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की जिसमें 2009–10 के दौरान के 8.0 प्रतिशत की तुलना में जीडीपी कारक लागत पर 8.5 प्रतिशत के रूप में बढ़ गया।

2010–11 में कृषि क्षेत्र में अधिक सुधार के कार्यनिष्पादन ने उल्लेखनीय जीडीपी वृद्धि में

महत्वपूर्ण योगदान दिया। कृषि और सहायक गतिविधियों के क्षेत्र ने पिछले वर्ष के 0.4 प्रतिशत की कमतर वृद्धि की तुलना में 6.6 प्रतिशत की वृद्धि देखी। खाद्यान्न उत्पादन एक नए रिकार्ड की ओर बढ़ा जिसमें खरीफ और रबी दोनों फसलें बहुत अच्छी रहीं।

2010–11 के दौरान औद्योगिक क्षेत्र मंदी के डर से पिछले वर्ष के 8 प्रतिशत की तुलना में 8.2 प्रतिशत की दर से बढ़ा। खनन और विनिर्माण दोनों क्षेत्रों में वृद्धि विशेष रूप से कमजोर थी जिसमें खनन हेतु औद्योगिक उत्पादन का सूंचकांक 2009–10 के 9.9 प्रतिशत से गिरकर 2010–11 में 5.8 तक कम हो गया

और विनिर्माण हेतु 2009–10 के 11 प्रतिशत से 2010–11 में 8.2 प्रतिशत के रूप में कम हो गया। विनिर्माण क्षेत्र में उपभोक्ता वस्तुओं को छोड़कर सभी सेवा क्षेत्रों में वृद्धि में कमी के कारण निम्नतर वृद्धि दर्ज की जबकि उपभोक्ता वस्तुओं ने 2009–10 के 6.2 प्रतिशत से बढ़कर 7.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। पूंजीगत वस्तुओं के खंड ने 2010–11 के दौरान नकारात्मक वृद्धि दर्ज की। कोयला क्षेत्र का कार्यनिष्पादन चिंता का विषय था। सेवा क्षेत्रों में वृद्धि भी 2009–10 के 10.1 प्रतिशत से 2010–11 के दौरान 9.6 प्रतिशत के रूप में गिर गयी।

अंकटाड के अनुसार भारत को वैश्विक विदेशी प्रत्यक्ष निवेशों में रैंकिंग में दूसरा स्थान दिया गया। हालांकि वर्ष के दौरान भारत में एफडीआई आवक 23 बिलियन

प्रबंधन विचार विमर्श और विश्लेषण रिपोर्ट

अमरीकी डॉलर की रही जोकि पिछले वर्ष 37.76 बिलियन अमरीकी डॉलर के लगभग थी। गिरावट का मुख्य कारण खनन क्षेत्रों और एकीकृत शहरी परियोजना से संबंधित पर्यावरण की संवेदनशील नीतियों को अपनाना था।

वर्ष के दौरान निर्यात 37.5 प्रतिशत बढ़ा जिसने 2009–10 के 179 बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में 251 बिलियन अमरीकी डालर के एक सर्वकालीन उच्चतर स्तर को छुआ तथापि, यह वृद्धि 2009–10 के

दौरान अनुभव की गयी निर्यातों की गिरावट के परिणामस्वरूप एक लघु आधार के कारण आंशिक रूप से हुई। पिछले 3 वर्षों का सीएजीआर पूर्ववर्ती 3 वर्षों के दौरान के 25.0 प्रतिशत की तुलना में 14.7 प्रतिशत रहा। उत्तम निर्यात कार्य निष्पादन में इंजीनियर उत्पादों, तेल, कीमती पत्थर और जेवरात, कपड़ा और औषधीय जैसे क्षेत्रों से सहयोग मिला। आयातों ने भी 21.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्शायी और 381 बिलियन अमरीकी डालर का रहा। इस प्रकार से भारत का कुल व्यापार आंकड़ा लगभग 630 बिलियन अमरीकी डालर पहुँच गया जो 1.2 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर के भारत के जीडीपी का आधा है।

वर्तमान लेखा डेफिसिट 2011–12 में अधिक मजबूत घरेलू और आयात मांग के साथ जीडीपी के 2.7 प्रतिशत के आसपास रहने की संभावना है। 2011–12 के दौरान निर्यात अमरीकी डालर 330 बिलियन और आयात 484 बिलियन अमरीकी डालर के लगभग रहने की संभावना है।

प्रबंधन विचार विमर्श और विश्लेषण रिपोर्ट

डब्ल्यू पी आई मुद्रास्फीति सम्पूर्ण वर्ष दर वर्ष मार्च, 2011 में 8.98 प्रतिशत रही जो अप्रैल, 2010 में रिकार्ड किए गए 11.00 प्रतिशत की ऊँचाई से महत्वपूर्ण रूप से गिर गयी।

31 मार्च, 2011 को भारत का कुल विदेशी मुद्रा आरक्षित 305 बिलियन अमरीकी डालर रहा और इस प्रकार से चीन जापान, ईयू, रूस सऊदी अरब और ताईवान के पश्चात भारत विश्व में विदेशी मुद्रा आरक्षित का सातवां सबसे बड़ा धारक रहा।

तथापि, घरेलू अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति मुख्य चिंता का विषय रही जो 9.4 प्रतिशत रही। वर्ष के दौरान खाद्य मुद्रा स्फीति अनाज, चीनी, दालों, सब्जियों, फल, दूध, अंडे, मांस और मछली आदि में उच्चतर रही। यहाँ तक कि खाद्य एतर मदों के समूह में भी जैसे कि काटन, पटसन और रेशम जैसे फाइबर में मजबूत मुद्रास्फीति दबाव महसूस किए गए। खनिज कीमतें भी तांबे और अन्य आधारगत धातुओं की उच्चतर वैश्विक लागतों के कारण बढ़ गयीं। अन्तर्राष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों में विनियंत्रण मुक्तता एक तीव्र वृद्धि का कारण बने। कोयले की

कीमतें भी तेजी से बढ़ रही हैं जो सम्पूर्णतया मुद्रास्फीति दबाव में वृद्धि कर रही हैं।

कुछ अन्य कारण जैसे उच्च ब्याज दर परिदृश्य, उच्चतर इनपुट कीमतें और म्यूटिड निवेश गतिविधियाँ तथा अन्तरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था परिदृश्य में अनिश्चितताओं के चलते आगामी वर्ष में प्रथम आधे समय में जीडीपी वृद्धि के सीमित रहने की संभावना है,

प्रबंधन विचार विमर्श और विश्लेषण रिपोर्ट

तथापि सामान्य मुद्रा स्फीति तथा घरेलू मांग परिस्थितियों में प्रत्याशित सुधार और वैश्विक परिदृश्य में सामान्य आशान्वित वापसी के कारण घरेलू आर्थिक गतिविधियों के वर्तमान वर्ष के दूसरे आधे समय में सुधरने की आशा की जाती है।

अवसर एवं संकट

वैश्विक अर्थव्यवस्था धीरे–धीरे 2008 में अनुभव की गयी खराब आर्थिक मंदी से उबर रही है। 2010 में विकासशील देशों और उभरती हुए अर्थ व्यवस्थाओं द्वारा दर्शाई गयी उच्च आर्थिक वृद्धि ने उनके समक्ष वर्तमान उत्साहजनक परिस्थितियों की चुनौती को आगामी वर्ष में और आगे बढ़ाने के लिए दबाव डाला है। मध्यपूर्व और उत्तरी अफ्रीका में राजनैतिक तनावों में वृद्धि ने 2011 में वैश्विक व्यापार पर एक संभावित प्रतिकूल प्रभाव डालने की आशंका जताई है। जापान में तोहूकू भूकंप और सुनामी जैसी परिस्थितियों ने पूरे विश्व में आर्थिक कार्यनिष्पादन पर प्रतिकूल रूप से प्रभाव डाला है। 2010 में खाद्य तेल, धातु और कच्ची सामग्रियों की कीमतों में तेजी से बढ़ोतरी हुई है तथा उच्चतर दबाव के 2011 में कायम रहने की आशा की जाती है।

इस प्रकार से वैश्विक वृद्धि 2010 के 5.1 प्रतिशत से 2011 में 4.3 प्रतिशत और 2012 में 4.5 प्रतिशत रहने की संभावना है। फिस्काल उत्प्रेरक की वापसी और उच्चतर तेल और अन्य मदों की कीमतों के कारण वृद्धि विकसित अर्थव्यवस्थाओं में 2.2 प्रतिशत अनुमान की गयी है। वृद्धि उभरती हुई और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में भी आर्थिक संकुचनों और बढ़ती हुई मदों की कीमतों के कारण 6.6 प्रतिशत के रूप में कम होने की आशा की जा रही है।

भारतीय अर्थव्यवस्था के 2011–12 में लगभग 8.2 प्रतिशत के रूप में बढ़ जाने का अनुमान लगाया गया है। मुद्रा स्फीति में वर्ष के प्रथम आधे समय में

प्रबंधन विचार विमर्श और विश्लेषण रिपोर्ट

अन्तरराष्ट्रीय पेट्रोल की कीमतों से घरेलू कीमतों में बढ़ोतरी की आवाजाही तथा विनिर्मित उत्पादों में उच्च इनपुट कीमतों के निरंतर प्रवाह के जारी रहने के कारण एक वर्द्धित स्तर पर बनी रहेगी।

घरेलू कीमतें अन्तरराष्ट्रीय मदों की कीमतों के साथ आगे सामंजस्य में मुद्रा अंतराल के शनै–शनै बढ़ने की संभावना है। मदों की कीमतों में नए दवाब 2011–12 में मृद्रा स्फीति प्रबंधन हेतु एक चुनौतीपूर्ण वर्ष बनाऐंगे। आरबीआई का मुद्रा स्फीति रोधी कदम जो आगे आने वाले महीनों में कायम उच्च मुद्रा स्फीति को कम करने के लिए है, भारत की उच्च वृद्धि को बनाए रखने के संदर्भ में एक जोखिम पैदा कर सकता है।

तथापि, वैश्विक आर्थिक बढ़ोतरी के स्थिरिकरण के कारण भारत के प्रमुख निर्यात बाजारों की वापसी और नए बाजारों में धीरे–धीरे पदार्पण से देश के निर्यात में 2011–12 के दौरान धीरे–धीरे बढ़ोतरी होने की आशा की जाती है। आयातों में भी आर्थिक गतिविधियों में कायम रहने वाले सुधार तथा प्रत्याशित उच्च मदों की कीमत में सुधार के फलस्वरूप धीरे–धीरे बढ़ोतरी की आशा की जाती है। तथापि, अन्तरराष्ट्रीय परिस्थितियों द्वारा पैदा की गयी अनिश्चिताएं निकट भविष्य में

निर्यात की बढ़ोतरी को बनाए रखने के संदर्भ में एक चुनौती प्रस्तुत कर सकती है। आगे मार्च, 2011 को समाप्त तिमाही के लिए अवलोकन की गयी विनिर्माण क्षेत्र में 5.1 प्रतिशत की धीमी वृद्धि दर सभी अनुमानित वृद्धि दरों में गिरावट ला सकती है।

पिछले फिस्काल में समुद्री पोतलदानों में 37.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी से प्रोत्साहित होकर भारत सरकार ने अमरीका से भारत के मर्केनडाइज निर्यातों को 2010–11 के 251 बिलियन अमरीकी डॉलर से अगले 3 वर्षों में 2013–14 तक 500 बिलियन अमरीकी डालर तक दुगुने से भी अधिक करने का लक्ष्य रखा है।

प्रबंधन विचार विमर्श और विश्लेषण रिपोर्ट

बाजार की रणनीति के रूप में एसटीसी एशिया (एशियान सहित) अफ्रीका और लेटिन अमरीका जैसे बाजारों में नए क्षेत्र खोलने, अपनी उपस्थिति बनाए रखना तथा पहले से विकसित बाजारों में बाजार हिस्से तथा कदम से विकसित बाजारों में उत्पाद प्रदान करने में वेल्यू चेन को प्रवाहित करने के लिए कदम उठाएगा।

एसटीसी अपने निर्यात सहित आयातों को बढ़ाने के लिए अवसरों का सर्वोत्तम प्रयोग करेगा जिनके द्वारा बिक्री कारोबार और लाभप्रदता में सुधार आएगा।

एसटीसी का कार्यनिष्पादन

कार्पोरेशन ने 2010–11 के दौरान 20,000 करोड़ का कारोबार किया जिसमें ₹ 178 करोड़ का सुधरा हुआ व्यापार लाभ रहा। वर्ष के दौरान कर से पहले लाभ (पीबीटी) रुपए 80 करोड़ का रहा। वर्ष के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में कार्यनिष्पादन नीचे दिया गया है –

₹ करोड़

	2010–11	2009–10
कारोबार		
निर्यात	492	1504
आयात	18938	19049
घरेलू	555	956
महा योग	**19985**	**21509**
वित्तीय		
व्यापार लाभ	178	145
ब्याज आय(निवल)	18	138
कर से पहले लाभ(पीबीटी)	80	171
कर के बाद लाभ(पीएटी)	56	107
लाभांश	**18**	**28.5**
निवल मूल्य	679	644

कारोबार

कार्पोरेशन ने 2010–11 के दौरान 20,000 करोड़ का कारोबार किया जिसमें रुपए 178 करोड़ का व्यापार लाभ रहा। यह उपलब्धि इसलिए और अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कार्पोरेशन के कारोबार को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने वाले इसके नियंत्रण के बाहर की परिस्थितियों के बावजूद प्राप्त की गयी।

वर्ष के दौरान कार्पोरेशन ने व्यापार के कई नए क्षेत्रों की खोज की तथा व्यापार के कई क्षेत्रों में व्यापार में वृद्धि दर्ज की।

खंडानुसार कार्यनिष्पादन

निर्यात

वर्ष के दौरान कार्पोरेशन ने लौह अयस्क, मक्का, अरण्डी का तेल आदि जैसी निर्यात की विभिन्न मदों पर जोर दिया। कार्पोरेशन ने सफलतापूर्वक लौह अयस्क के व्यवसाय का विस्तार किया तथा पिछले वर्ष के केवल ₹ 46 करोड़ की तुलना में रुपए 140 करोड़ मूल्य का पोतलदान किया। कार्पोरेशन ने ₹ 69 करोड़ मूल्य के मक्का के निर्यात भी किए और रुपए 92 करोड़ मूल्य का अरण्डी के तेल का निर्यात किया। लौह एवं स्टील की मदों ने भी ₹ 148 करोड़ के निर्यात कारोबार में योगदान दिया।

वर्ष के दौरान कार्पोरेशन ने शीरा जैसी नई चीजों (₹ 31 करोड़) से लेकर जो एम्सटर्डम एवं दक्षिण कोरिया को निर्यात किया, परिवहन एवं संरचना वाहन बेनिन को और सीसम के बीज वियतनाम को निर्यात किए गए। वर्ष के दौरान कुल निर्यात ₹ 492 करोड़ का रहा।

प्रबंधन विचार विमर्श और विश्लेषण रिपोर्ट

आयात

कार्पोरेशन का ₹ 18938 करोड़ का आयात कारोबार लगभग पिछले वर्ष के समान स्तर का था। आयात की प्रमुख मदें निम्नलिखित हैं –

सर्राफा

गत वर्षों में एसटीसी देश में सर्राफा के एक प्रमुख आयातक के रूप में उभरा है। सर्राफा की आयात बिक्रियाँ ₹ 14964 करोड़ के एक सर्वकालीन उच्चतर स्तर पर पहुँच गयी। वर्ष के दौरान कार्पोरेशन ने न केवल कई नए खरीददारों को सूचीबद्ध किया बल्कि नए विदेशी आपूर्तिकर्ताओं के साथ व्यवस्थाओं को अंतिम रूप देते हुए आपूर्ति आधार का भी विस्तार किया। कार्पोरेशन ने अपने एसोसिएट्स को आपूर्तियाँ प्रेषणों, बकायों के निपटान और भारतीय खरीदारों, विदेशी आपूर्तिकर्ताओं और बैंकों के साथ निकट समन्वयन बनाए रखने के साथ उन्हें संतोषजनक सेवाएँ प्रदान की।

हाइड्रोकार्बन

कार्पोरेशन देश में फैले हुए एनटीपीसी के विभिन्न ऊर्जा संयंत्रों हेतु एनटीपीसी को लगभग ₹ 8000 करोड़ मूल्य के आयातित स्टीम कोयले की 12 मिलियन मीट्रिक टन की आपूर्ति हेतु आदेश प्राप्त करने में सफल रहा। 2011–12 के दौरान आदेश पूर्णतया क्रियान्वित किए जाएंगे।

पोत लदान पहले ही प्रारंभ हो चुका है और समीक्षाधीन वर्ष के दौरान एनटीपीसी के विभिन्न ऊर्जा स्टेशनों को ₹ 670 करोड़ की राशि की आयातित कोयले की आपूर्ति की गयी। विभिन्न राज्य विद्युत बोर्डों और अन्य ऊर्जा उत्पादक कम्पनियों की मांग को पूरा करने के लिए कोयले के आयात के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं।

प्रबंधन विचार विमर्श और विश्लेषण रिपोर्ट

अलौह खनिज

वर्ष के दौरान कार्पोरेशन ने पहली बार ₹ 51 करोड़ मूल्य का मैगनीज का आयात किया। आगामी वर्ष में इस व्यवस्था को बढ़ाने के लिए तथा इसकी व्यापार बास्केट में अन्य अलौह खनिजों को शामिल करने का भी कार्पोरेशन का अथक प्रयास रहेगा।

उर्वरक

वर्ष के दौरान एसटीसी को भारत सरकार द्वारा एक बार फिर से यूरिया के आयात के लिए कहा गया। तदनुसार एसटीसी ने ₹ 2208 करोड़ मूल्य का लगभग 1.5 मिलियन मीट्रिक टन यूरिया के आयात बिक्री की व्यवस्था की जबकि पिछले वर्ष केवल 0.68 मिलियन मीट्रिक टन का आयात किया गया था जो ₹ 867 करोड़ का था। एसटीसी का डीएपी/एमओपी/एमएपी/एनपीके की आपूर्ति में पदार्पण की योजना है और इसने अपने आपको

स्वदेशी उर्वरक उत्पादों/विवरण कम्पनियों में एक अनुमोदित उर्वरक आपूर्तिकर्ता के रूप में पंजीकरण करा लिया है।

दालें

एटीसी ने सरकारी निर्देशों पर खुले बाजारों में बिक्री हेतु दालों का आयात करना जारी रखा तथा पीडीएस के अधीन वितरण हेतु राज्य सरकारों की

ओर से दालों का प्रापण किया। इन कार्यों से ₹ 408 करोड़ का एक बिक्री कारोबार हुआ। इसके अतिरिक्त कार्पोरेशन ने वाणिज्यिक लेखे पर दालों का आयात भी किया, इसके परिणामस्वरूप ₹ 37 करोड़ की बिक्रियाँ हुईं।

खाद्य तेल

अस्थिर बाजार की परिस्थितियों के बावजूद एसटीसी ने सफलतापूर्वक अपने निजी लेखे और महाराष्ट्र, गोवा, राजस्थान और यूपी की राज्य सरकारों हेतु पीडीएस के अधीन आपूर्ति हेतु जो एक लीटर के पाउचों में की जानी थी, खाद्य तेल का आयात किया जबकि सरकारी लेखे पर आयात के द्वारा ₹ 228 करोड़ का कारोबार हुआ। दूसरी ओर वाणिज्यिक लेखे पर ₹ 289 करोड़ का कारोबार हुआ। कार्पोरेशन एक निरंतर आधार पर खाद्य तेल की उनकी आयात मांगों की पूर्ति के लिए संसाधकों के साथ लघु अवधि और दीर्घावधि गठबंधन व्यवस्थाएँ करने का प्रयास कर रहा है।

घरेलू बिक्रियाँ

वर्ष के दौरान कार्पोरेशन ने ₹ 555 करोड़ की घरेलू बिक्रियाँ कीं। इनमें तेलों, बीजों और खलियों की ₹ 268 करोड़ की बिक्रियाँ शामिल हैं जबकि पिछले वर्ष रुपए 165 करोड़ की बिक्रिया रहीं। कार्पोरेशन ने ₹ 117 करोड़ मूल्य के हाइड्रोकार्बन की बिक्रियाँ की और ₹ 83 करोड़ की दालों की बिक्रियाँ कीं।

प्रबंधन विचार विमर्श और विश्लेषण रिपोर्ट

जूट के सामान की ₹ 47 करोड़ मूल्य के बिक्रियाँ भी की गयीं। कार्पोरेशन कुछ राज्यों की सरकारों से भी एसटीसी के ब्रांड के अधीन चाय की आपूर्ति हेतु बातचीत कर रहा है। चाय के व्यवसाय के विस्तार को ध्यान में रखते हुए इसका भविष्य में और अधिक चाय संसाधन यूनिटों को सूचीबद्ध करने का प्रस्ताव है।

लाभप्रदता

समीक्षा अधीन अवधि के दौरान एसटीसी ने ₹ 178 करोड़ का एक व्यापार लाभ किया जबकि पिछले वर्ष यह व्यापार लाभ ₹ 145 करोड़ का था। वर्ष के दौरान पीबीटी ₹ 80 करोड़ का रहा।

प्रमुख उपाय

वर्ष के दौरान कार्पोरेशन ने अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए लघु अवधि सहित दीर्घावधि हेतु कई उपाय किए। कुछ प्रमुख उपाय नीचे दर्शाए गए हैं –

- देश भर में एनटीपीसी के फैले हुए विभिन्न ऊर्जा संयंत्रों को 12 मिलियन मीट्रिक टन आयातित स्टीम कोयले की आपूर्ति हेतु आदेश सफलतापूर्वक प्राप्त किए।
- एक सरकारी कम्पनी के साथ एसटीसी के निजी ब्रांड केन्द्र में चाय के निर्यात हेतु मिश्र में एक करार पर हस्ताक्षर किए। इस समझौता ज्ञापन में मिश्र सहित अन्य अफ्रीका के देशों को निर्यात की अन्य मदें जैसे कच्चा रबड़, सीसम के बीज, फ्रॉजेन मीट, फ्रॉजेन मछली/श्रिम्प्स, खुले तम्बाकू के पत्ते आदि शामिल हैं।
- एक बड़े वाणिज्यिक स्तर पर कार्य करने हेतु मृदा और मौसम की परिस्थितियों की उपयुक्तता को स्थापित करने के लिए एक पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर दालों के उत्पादन हेतु अनुसंधान एवं विकास कार्य के लिए तथा दालों सहित कृषि मदों हेतु लेटिन अमरीका में संविदा फार्मिंग हेतु एसईए – एलएसी संगोष्ठी 2010–11 में शामिल हुए।
- वर्ष के दौरान लगभग 40,000 मीट्रिक टन के मैगनीज अयस्क के क्षेत्र में पदार्पण किया और आयात किया।

प्रबंधन विचार विमर्श और विश्लेषण रिपोर्ट

- भूटान, बेनिन आदि जैसे देशों को बसें, एम्बुलेंस और संरचना उपकरणों का सफलतापूर्वक निर्यात किया।
- सीसम के बीज और शीरे का निर्यात प्रारंभ किया।
- कृषि मदों में व्यवसाय को बढ़ाने के लिए एसटीसी के भोपाल कार्यालय से कार्य पुनः प्रारंभ किये।
- नेशनल स्पोट एक्सचेंज लिमिटेड के माध्यम से दालों की बिक्री प्रारंभ की।

कार्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी

आपका कार्पोरेशन सार्वजनिक उद्यमों के विभाग द्वारा अधिसूचित कार्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी पर मार्गनिर्देशों के संबंध में अपने दायित्वों की पूर्ति करने के लिए प्रतिबद्ध है। वास्तव में केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों और उनके प्रशासनिक मंत्रालयों के मध्य वार्षिक समझौता ज्ञापन में एक आवश्यक मानदण्ड सीएसआर गतिविधियों की पूर्ति के लिए हस्ताक्षर किया गया है। एसटीसी के लिए सीएसआर इसके व्यवसाय कार्यों का एक अभिन्न भाग है। 2007–08 से कार्पोरेशन तमिलनाडु के लघु किसानों से प्रत्यक्ष रूप से चाय के पत्तों का घरेलू प्रापण करता रहा है। इसके द्वारा वह उनके सामाजिक, आर्थिक उद्धार में सहयोग कर रहा है। इसके अलावा प्रत्येक वर्ष कार्पोरेशन कुछ अन्य सीएसआर गतिविधियाँ करता है। 2010–11 के दौरान इस संदर्भ में एसटीसी द्वारा किए गए कुछ उपाय निम्नलिखित हैं –

- नई दिल्ली में आयोजित किए गए समारोह में कॉमन वेल्थ गेम्स 2010 के विजेता भारतीय खिलाड़ियों का सम्मान करना।
- कर्नाटक में एक ऐतिहासिक स्मारक के संरक्षण और सौन्दर्यकरण के लिए भारत के पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग को सहयोग करना।
- हिमाचल प्रदेश के गाँव में सौर ऊर्जा प्रदान करना।
- बंगलौर और चेन्नई में वृक्षारोपण।
- नागपुर अन्तरराष्ट्रीय मैराथन को सह – प्रायोजित करना।
- झोपड पट्टी में रहने वाली निम्नवर्गीय महिलाओं के लिए स्वास्थ्य और सफाई की शिक्षा पर कार्यशाला का आयोजन करना।

प्रबंधन विचार विमर्श और विश्लेषण रिपोर्ट

- हिमाचल प्रदेश में गरीब लोगों को कम्बल का वितरण।
- हरियाणा में गरीब बच्चों को खाद्य के वितरण हेतु एक वेन की आपूर्ति।
- समय–समय पर विभिन्न कार्यक्रमों को सह–प्रायोजित करने के द्वारा कला, खेलों और संस्कृति का संवर्द्धन करना।

आंतरिक नियंत्रण और पद्धतियाँ

एसटीसी की आंतरिक नियंत्रण की एक मजबूत प्रणाली है जो कार्पोरेशन की सांविधिक अपेक्षाओं, विनियमावली और विभिन्न नीतियों और मार्गनिर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करती है। इसके अलावा नियंत्रण एवं महा लेखा परीक्षक द्वारा सांविधिक लेखा परीक्षा एसटीसी के आंतरिक लेखा परीक्षा प्रभाग के साथ निकट समन्वयन से व्यावसायिक एजेंसियों के माध्यम से की जाती है जो यह सुनिश्चित करें कि कार्पोरेशन में इसके लिए एक जाँच और संतुलन की उपयुक्त प्रणाली है जिससे इसकी सभी परिसम्पतियों की सुरक्षा और संरक्षण किसी भी संभावित हानियों से बचाकर किया जा सके तथा सौदे प्राधिकृत हों और रिकार्डिड तथा उपयुक्त रूप से रिपोर्ट किए हों।

आंतरिक लेखा परीक्षा समय–समय पर कार्पोरेशन द्वारा तैयार किए गए लेखा मानदण्डों, वार्षिक लेखा परीक्षा कार्यक्रमों और नियमों/नीतियों के अनुसार किए जाते हैं। लेखा परीक्षा एजेंसियों द्वारा की गयी सिफारिशों/आकलनों का समयगत रूप से अनुपालन किया जाता है। तिमाही वित्तीय विवरणिकों सहित आंतरिक, बाह्य और सरकारी लेखा परीक्षा के निष्कर्षों के संक्षेप की भी विगत में जारी किए गए निर्देशों के अनुपालन पर एक रिपोर्ट सहित प्रबंधन लेखा परीक्षा समिति और निदेशकों की लेखा परीक्षा समिति को रिपोर्ट किए जाते हैं।

कार्पोरेशन के पास एक सुपरिभाषित शक्तियों का प्रत्यायोजन है जो तीव्र वाणिज्यिक निर्णय लेने की दिशा में विभिन्न प्रबंधकीय स्तर हेतु शक्तियों को निर्धारित करता है। कार्पोरेशन द्वारा निर्धारित प्रणालियाँ और पद्धतियाँ सभी वाणिज्यक सौदों में अधिकतम पारदर्शिता सुनिश्चित करते हैं। कार्पोरेशन का एक सम्पूर्ण सतर्कता प्रभाग है जो यह अवलोकन करता है कि सभी मामलों में कम्पनी के नियम/पद्धतियाँ और सरकारी मार्गनिर्देशों का सख्ती से अनुपालन हो।

वर्ष के दौरान सभी वर्तमान व्यापार मार्गनिर्देशों की समीक्षा की गयी। इन्हें समेकित किया गया तथा इन्हें एक आपरेशन मैनुअल के रूप में पुनः जारी किया गया।

भविष्य की ओर

कार्पोरेशन ने इसकी शक्तियों, विगत कार्यनिष्पादन और वर्तमान अन्तरराष्ट्रीय और घरेलू व्यापार परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए अगले 3 वर्षों के लिए एक व्यावसायिक योजना बनाई है। योजना में कार्पोरेशन के निचले और उच्च दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण रूप से बढ़ोतरी प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है। कार्पोरेशन ने व्यवसाय का विकास करने के लिए लेटिन अमरीका, अफ्रीका और एशिया में संभावित बाजारों के रूप में कई देशों की पहचान की हैं। इसी प्रकार से कई जोर दिए

प्रबंधन विचार विमर्श और विश्लेषण रिपोर्ट

जाने वाले उत्पादों को भी पहचाना गया है। कार्पोरेशन द्वारा अनुसरण किए जाने वाली प्रस्तावित रणनीतियों में बाजारगत गठबंधनों के माध्यम से आपूर्ति आधार का विकास करना, अतिरिक्त रूप से निर्यात अवसरों को उत्पन्न करने के लिए आयात सहायता का प्रयास करना, भारत सरकार/अनुदान कार्यक्रमों के अधीन निविदाओं में बढ़ती हुई भागीदारी, पत्तन आधारित आधारभूत ढाँचे का प्रयोग निजी ब्रांड नाम के अधीन चाय का निर्यात, विदेशों में संविदा फार्मिंग करना, एसटीसी के अपने लेखे पर घरेलू व्यापार जैसे सोया, बीज, चना, सरसों के बीज आदि का घरेलू व्यापार आदि करना शामिल है। इसके अलावा कार्पोरेशन वर्तमान मदों जैसे सर्राफा, कोयला, उर्वरक, लौह और अलौह धातु, खजिन एवं अयस्क खाद्य तेल, दालें जैसी वर्तमान मदों के व्यवसाय को विकसित करने पर अतिरिक्त जोर देना जारी रखेगा।

जबकि ऊपर दर्शाई गई कुछ योजनाओं के कार्यान्वयन हेतु कार्रवाई पहले से ही प्रारंभ कर दी गयी है, अन्य योजनाओं को भी शीघ्र ही कार्यान्वित किए जाने की संभावना है। इस प्रकार से कार्पोरेशन की 2013–14 वर्ष के अंत तक लाभप्रदता में महत्वपूर्ण सुधार के साथ वर्तमान स्तर के लगभग ₹ 20,000 करोड़ के कारोबार को ₹ 40,000 करोड़ करके दुगुना करने की योजना है।

सर्तकता विवरणिका

इस वार्षिक रिपोर्ट में निहित कुछ विवरणिकाएँ लागू होने वाले नियमों और विनियमावली के अर्थ के अन्तर्गत अग्रेषण उन्मुख विवरणिकाएँ हो सकती हैं। ये विवरणिकाएँ सूचना तैयार किए जाने के समय प्रबंधन के विचारों और आकलन पर आधारित हैं और इनमें वे सब ज्ञात और अज्ञात जोखिम और अनिश्चितताएँ शामिल हो सकती हैं जो इस प्रकार की इस वार्षिक रिपोर्ट में पूर्णतया विचार विमर्श की गयी विवरणिकाओं में व्यक्त की गयी या लागू की गयी विवरणिकाओं के परिणामों या निष्पादन से वास्तविक रूप से भिन्न हो सकती हैं। कार्पोरेशन स्पष्ट रूप से इस प्रकार के किसी दायित्व या इसके अधीन सार्वजनिक रूप से किसी भी अद्यतन वक्तव्य या संशोधन को किसी अग्रेषण उन्मुख विवरणिका में कार्पोरेशन की आशाओं के अनुकूल कोई परिवर्तन दर्शाने के लिए उन परिस्थितियों घटनाओं आदि में किसी भी प्रकार का परिवर्तन या संशोधन करने या उसे सार्वजनिक करने में असहमत हैं जिन पर इस प्रकार की विवरणिका आधारित हैं।